GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

काकासाहब कालेलकर के प्रवासी साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न भाषाओं का अध्ययन

डॉ.अशोक परमार

सह.प्राध्यापक (मो) 9825587031
हिंदी शिक्षा विभाग(IASE), गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद 09

प्रस्तावना

“दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर” काकासाहब कालेलकर गांधीवादी लेखक थे। उन्होंने गूजरात विद्यापीठ में अध्यापक एवं आचार्य के रूप में कार्य किया था। उनका जन्म महाराष्ट्र के सतारा में हुआ था। महाराष्ट्र में जन्मे काकासाहब गुजरात एवं गुजराती के साथ इतने आत्मसात हो गए थे की गांधीजी ने उन्हें “सवाई गुजराती” का बिरुद दिया था। उनके चिन्तनात्मक किन्तु रसप्रद लेखो में कला, देश, प्रकृति, मानव एवं भारतीय संस्कृति की ओर भरपूर प्रेम का दर्शन होता है। “हिमालय का प्रवास”, “रखडवनो आनंद”, “जिववानो आनंद”, “जीवनलीला”, “जीवन संस्कृति” आदि उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह है। मूल महाराष्ट्र के होने के बावजूद उन्होंने गुजराती साहित्य में उत्तम सर्जन किया है। “गंगामैया“, “यमुनाराणी”, “उभयान्वयी”, “नर्मदा”, “दक्षिण गंगा”, “गोदावरी” आदि उनके गद्यलेख शैली के उत्तम रूप है। “हिमालय का प्रवास“ ,ब्रम्हदेश के प्रवास, “पूर्व आफ्रिका में”, “उगमनो देश जापान” उनके प्रवास वर्णन ग्रन्थ है। “स्मरणयात्रा“, एवं “ओतारती दिवालो” में उनके जीवन के प्रसंगो का वर्णन है। उनको साहित्य अकादमी एवार्ड एवं पद्मविभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

काका साहब कालेलकर के द्वारा रचित विभिन्न साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात उनके साहित्य में निम्नांकित प्रकार की भाषा संबंधित विविधता के दर्शन होते है। उनके लेखन में गुजराती, हिंदी, संस्कृत, कोकणी और अंग्रेजी भाषा का उपयोग प्रवासी साहित्य के अंतर्गत प्राप्त होता है। उनके द्वारा प्रवासी लेखन में प्रयुक्त विभिन्न भाषा के उपयोग संबंधित यह आलेख केवल "रखडवानो आनंद” निबंध संग्रह पर आधारित है। जिसका विस्तृत विवरण निम्नांकित है।

गुजराती

महाराष्ट्र में जन्मे काकासाहब गुजरात एवं गुजराती के साथ इतने आत्मसात हो गए थे की गांधीजी ने उन्हें “सवाई गुजराती” का बिरुद दिया था। “हिमालय नो प्रवास”,“ रखडवनो आनंद”,“जिववानो आनंद”, “जीवनलीला”,“जीवन संस्कृति” आदि उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह है। मूल महाराष्ट्र के होने के बावजूद उन्होंने गुजराती साहित्य में उत्तम सर्जन किया है। “गंगामैया“,“यमुनाराणी”, “उभयान्वयी”, “नर्मदा”, “ दक्षिण गंगा”, “गोदावरी” आदि उनके गद्य लेख शैली के उत्तम रूप है । “हिमालय का प्रवास “ , ब्रम्हदेश के प्रवास , “पूर्व आफ्रिका में”, “उगमनो देश जापान” उनके प्रवास वर्णन ग्रन्थ है। “स्मरणयात्रा“, एवं “ओतारती दिवालो” में उनके जीवन के प्रसंगो का वर्णन है । इस तरह उनका गुजराती भाषा के सर्जन के उत्तम नमूने प्राप्त होते है। उनके गद्य गुजरात के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में कक्षा 7 एवं 9 में समाविष्ट है।

हिंदी

गोवा प्रवास के दौरान उन्होंने गोवा में भाषा सम्बन्धित चर्चा करते हुए लिखा है - गोवा में हिन्दु लोगों का एक छोटासा पक्ष है जो मराठी को कोंकणी की प्रतिस्पर्धी समजते है। मराठी के प्रचार में वह कोकणी का विनाश देखते है। कोंकणी के बाद अगर कोई अधिगम योग्य भाषा हो तो वह राष्ट्रभाषा हिंदी है, ऐसा उनका मानना है। दूसरा पक्ष ऐसा

https://www.gapbhasha.org/

है जो कोकणी को खिली हुई भाषा की प्रतिष्ठा देने के पक्ष में भी नहीं है। इस प्रकार उनके उपर्युक्त लेखन के बावजूद उनका मानना है की ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी कोकणी और मराठी का विकास भी हो रहा है, और राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए भी हकारात्मक प्रतिकूल हवामान पैदा हो रहा है जिसका काका साहब ने आनंद व्यक्त किया है।

"रखडवानो आनंद" ग्रंथ में काकसाहब एक बार करसियांग की सभा में एक विद्वान जो बेल्जियम के थे उन्होंने प्रारंभ में हिंदी में बोले है ऐसा जिक्र किया है। इस विद्वान् की बात को आगे बढ़ाते हुए विद्वान के द्वारा बंगाली लोगों को पूछे गए प्रश्न का वर्णन करते है की हम हमारी बंगाली को राष्ट्रभाषा क्यों नहीं बना सकते? उन्होंने बंगालियों को यह कहा की जो राष्ट्रभाषा बनाने के लिए तैयार है ऐसी हिंदी के प्रचार में लग जाओ। उन्होंने नेपालियों को यह भी कहा की आपकी भाषा के विकास के लिए हिंदी से दूर मत जाना। और आपकी भाषा पर हिंदी का अधिक से अधिक प्रभाव होने देना चाहिए। उन्होंने लोगों से कहा की बंगाली और हिंदी के मध्य सहयोग हो इस हेतु से उन्होंने समुदाय को कहा की एक हमारी राष्ट्रभाषा है और एक हमारे राष्ट्रगीत की भाषा है। इस लिए दोनों के लिए हमारे मन में आदर और प्रचार का भाव होना चाहिए। काका साहब राष्ट्रभाषा के प्रचारक थे क्योंकि वह स्वयं राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए कलकत्ता गए है ऐसा उन्होंने लिखा है।

संस्कृत

काकसाहब कालेलकर के साहित्य में संस्कृत भाषा का प्रभाव जगह जगह पर प्राप्त होता है। काकासाहब के केवल एक ग्रंथ "रखडवानो आनंद" में प्राप्त संस्कृत भाषा का प्रभाव निम्नांकित रूप से स्पष्ट कर सकते है। अपने आप की कालिदास के साथ तुलना करने पर लोगों के द्वारा टीका होगी ऐसा स्पष्ट करते हुए काकासाहब संस्कृत वाक्य का उपयोग करते है -

"पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्"

अर्थात पर्वत के ऊपर दो परमाणु और पदार्थतत्व का अस्तित्व है। सूर्यास्त देखने की इच्छा के संदर्भ में हकारात्मक बात रखते हुए वह कहते है कि बादलों ने मुझे टकोर किया की किसी को अस्त होते हुए देखने के लिए इतनी जिज्ञासा नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा की सही में बादल अस्त होता ही नहीं है। प्रकाश का अस्त होता तो आपके तक सीमित रूप से अस्त होता है।

"उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमने तथा। संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।।"

अर्थात - सूर्य उदय एवं अस्त के वक्त एक समान रंग का होता है, वैसे ही सज्जन पुरुष भी सुख में और दुःख में एक समान स्वभाववाले होते है ।

कन्या कुमारी की कथा का वर्णन करते हुए काकासाहब लिखते है- कन्याकुमारी की कथा भी करूण है। यहाँ के किनारे पर बिखरी अक्षत (चावल) जैसी बालूं, मानेक के टूकडे जैसी लाल बालूं जैसे गुलाल, और श्याही को शोषनेवाली काली बालूं ये सब करूण कहानी को अधिक करूण बनाने में सहाय करती है। उन्हों नें ऐसी करूणता का वर्णन करते हुए लिखा है कि करूण रस में जो जीवन की सच्ची और पूर्ण प्रतीति हो सकती है। इस बात की पूर्तता के लिए उन्हों ने संस्कृत श्लोक का उपयोग किया है -

"दुःखं सत्यं सुखं माया, दुःखं जन्तोः परं धनम्। दुःखं जीवन-ह्रदगतम् ।।"

अर्थात - दुःख सत्य और सुख माया उत्पन्न करता है, मनुष्यों के लिए दुःख परम धन है क्योंकि दुःख जीवन को योग्य रूप से समजता है। दुःख से परास्त नहीं होना चाहिए जो व्यक्ति दुःख को जीवन समृद्धि का आनंद मानता है वह किसी से परास्त नहीं हो सकता है।

सोने की खान में पत्थरों को कुटने की क्रिया को देखकर लिखते है, ये कूटने की क्रिया देखकर सही में दया आती है। प्रत्येक उपकरण में क्रमशः पत्थर तूटते जाते है। और जैसे जैसे कूटते है वैसे वैसे उसके आसपास वह आयताकार होते जाते है। यहाँ काकासाहब नें निम्नांकित वाक्य का प्रयोग किया है -

https://www.gapbhasha.org/

"चक्र भ्रमति मस्तके"।

- अर्थात मस्तक पर चक्र घूम रहा है। सोने की खान के विषय में अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए काकासाहब लिखते है- पृथ्वी की गहराई में प्रत्येक 500 या 1000 फिट के अंतराल पर इधर उधर खड्डे बनाकर मनुष्य पृथ्वी के आंत को खाकर कहता है कि यह मनुष्य की बहादुरी है। प्रकृति पर का मनुष्य का विजय है। ऐसा करने के लिए मनुष्य अपने भाई मनुष्य को ही प्रलोभन देकर पृथ्वी के उदर में भेज देता है। अगर वहाँ किसी का हाथ तूट जाय, सर फूट जाय, किसी के प्राण चले जाय अगर उससे भी बूरा किसीका दिमाग खिसक जाय तब मनुष्य ठंडे मन से यह कहेगा कि यह क्षति की मात्रा कम है। सही में प्रमाणिक मनुष्य जाति का सर ही चक्रा गया है। इस लिए ऐसी नर्क जैसी प्रवृत्ति वह करता है। ऐसा लिखते हुए काका साहब संस्कृत वाक्य का प्रयोग करते है -

"स्वापतेय कृते मर्त्याः किं किं पापं न कुर्वते? ।"

अर्थात - मनुष्य अपनी नींद के लिए कौन-कौन से पाप नहीं करते ? उपर्युक्त वाक्यांश के द्वारा काकासाहब का संस्कृत भाषा का प्रेम दृष्टिगोचर होता है। "रखडवानो आनंद" ग्रंथ में काकसाहब सागर तीर्थ के दर्शन समय के अभाव के कारण नहीं कर सके उसका वर्णन करते हुए उन्हों ने कहा है कि -

"सागरे सर्व तीर्थानी"।

अर्थात सागर में सब तीर्थ है। "रखडवानो आनंद" ग्रंथ में काकसाहब ने किसी मूर्ति की प्रशस्ति करते हुए लिखा यह संस्कृत वाक्य निम्न प्रकार है -

"मम व्रते हृदयं ते ददामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु" ।

अर्थात - में अपनी प्रतिज्ञा में मेरा हृदय तुजे देता हूँ, और मेरा मन तेरे लिए योग्य होने देता हूँ। ज्योर्तिलिंग की प्रशंसा करते हुए "रखडवानो आनंद" ग्रंथ में काकसाहब ने निम्नांकित संस्कृत उक्ति का उपयोग किया है-

"झलापुरे रम्यविशालकेस्मिन। समुल्लसन्तं च जगत वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतर-स्वभावम् धृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।"

अर्थात झालापुर एक सुन्दर और विशाल स्थान में विश्व की उत्तम चीजे निखर रही है, मै अधिक उदार स्वाभाव की पूजा करता हूँ, और धुश्नेश्वर नाम के शिव तत्व में शरण लेता हूँ ।

"रखडवानो आनंद" में काकसाहब ने पुत्रप्रेम के विषय में संस्कृत भाषा में निम्नांकित उदगार किया है-

"अंगात अंगात संभवसि, हृदयात अभिजायते। आत्मा वै पुत्र नामासिः स जीव शरदः शतम्।"

अर्थात आप शरीर से और हृदय से जन्मे है, आत्मा पुत्र का नाम है और वह सो शरद तक जिन्दा रहता है। अशोक एवं अर्जुन के हृदय परिवर्तन के सन्दर्भ में समज देते हुए लिखते है -

"अहो बत ! महत्पापं कर्तु व्यवसिता वयम् यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यता।।"

अर्थात - ओह ! हम एक महान पाप करने के लिए संकल्पबद्ध है, वह राज के आनंद के लिए अपने सम्बन्धियों को मरने के लिए तैयार थे।

सम्राट अशोक ने बौध उपदेशको को पश्चिम की ओर भेजा था । उसके प्रभाव के रूप में पापीओं को भी क्षमा करने वाले दुर्जन का भी प्रतिकार नहीं करना चाहिए ऐसे उपदेश देने वाले ख्रिस्ती धर्म का उदय हुआ होगा ऐसा मानकर भगवान बौध के निम्नांकित कथन को याद करते हुए कहते है -

"नहि वेरेण वेराणि संमन्तीध कुदाचन। अवेरेण च संगन्ती एस धम्मो सनन्तनो।।"

अर्थात - वह शत्रुओ के सत्रुओ के साथ भी कभी भी सहमत नहीं होते है, अवेर से ही वेर कम होता है वही सनातन धर्म है। काकसाहब ने सूर्यनारायण के उपस्थान के वक्त मन में मनु का श्लोक बोले थे, जिसकी भाषा संस्कृत थी, जो निम्नांकित था -

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

"आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। ता यदस्य अयनं जातम् इति नारायण स्मृति ।।"
अर्थात- पानी को नर कह जाता है और पानी पुरुषो के पुत्र है, जो उसका चन्द्र बना है वह नारायण स्मृति है। अतः काकासाहब कालेलकर के ग्रन्थ या लेखनी पर संस्कृत भाषा का प्रभाव प्राप्त होता है, जो उपर्युक्त बातों से पता चलता है।

अंग्रेजी

काका साहब कालेलकर के प्रवासी लेख साहित्य और उनके उपरोक्त ग्रंथो में जैसे मातृभाषा मराठी, कर्म भाषा गुजराती, और राष्ट्रभाषा हिंदी का कही न कही उपयोग हुआ है वैसे ही उनके लेखन में कई कई जगह अधिक स्पष्टता के लिए अंग्रेजी के शब्द या वाक्यों का उपयोग हुआ है, जो निम्नांकित है-
"रखडवानो आनंद" ग्रंथ में काकसाहब ने औरंगाबाद के मकबरे का वर्णन करते हुए वोल्टर स्कोट की पंक्तिया अंग्रेजी में लिखी है-

"If thou wouldst view fair Melrose aright, Go visit it by the pale moonlight"।
अर्थात - अगर आप मेलरोज (फुल या गुलाब का मध) को देख सकते (कल्पना कर सकते) तो चन्द्र के पीले प्रकाश में उसे देखो (भावानुवाद - अगर स्वयं प्रकाश को न पहचाने तो पूर्णिमा का चन्द्र देख ले)। इस ग्रन्थ में उन्होंने ताज महल और बीबी के मकबरे के मीनारे की तुलना करते हुए कहा है- "ताज के मीनार कुछ लम्बे और पतले (Tapering) होते जाते है, जब की मकबरे के मीनारे सीधे दिखते है। अर्थात कही-कही उन्होंने अंग्रेजी शब्दों के माध्यम से अपने अर्थ की स्पष्टता करने का प्रयास किया है। दो कबरों का वर्णन करते हुए लिखा है-"यहाँ वह प्रेमी युगल साथ में सो रहा था। मध्य में मुमताज महल की कबर है। औरंगजेब की कंजूसी के कारण शाहजहाँ को भी मृत्यु के बाद वही रोज़ा में अपनी पत्नी के पास आराम करने का मौका प्राप्त हुआ उनकी कबर थोड़ी बाजु में और थोड़ी सी ऊँची है। इस वक्त काका साहब वर्डझवर्थ की पंक्ति को याद करते हुए निम्नांकित अंग्रेजी लिखते है -

" Twelve steps or more, from my mother's door, And they are side by side " ।
अर्थात - बारह चरण या इससे अधिक मेरी माता के द्वार से और एक दुसरे के अगल-बगल। मसूरी के पर्वत पर से उतरकर फिर से चढ़े पुनः उतरे बहुत चढ़े वहा से चक्कर आये ऐसा वर्णन करते हुए उन्होंने अंग्रेजी में लिखा है -

"So steep the path, the foot was fain, Assistance from the hand to gain " ।
अर्थात - रास्ता अधिक ढलानवाला था पग ख़ुशी से हाथ के सहयोग से चलते थे (भावानुवाद - राह चाहे कठिन हो किन्तु साथ में चलेंगे तो कुछ प्राप्त होगा)। अतः यहाँ हम देख सकते है कि काकासाहब कालेलकर के प्रवासी लेख साहित्य और उनके उपरोक्त ग्रंथो में जैसे मातृभाषा मराठी, कर्म भाषा गुजराती, और राष्ट्रभाषा हिंदी का कही न कही उपयोग हुआ है, वैसे ही अंग्रेजी का उपयोग हुआ है।

मराठी

काकासाहब का का जन्म महाराष्ट्र के सतारा में हुआ था। महाराष्ट्र में जन्मे काकासाहब गुजरात एवं गुजराती के साथ इतने आत्मसात हो गए थे की उनका गुजराती सर्जन अधिक था किन्तु उनके गुजराती सर्जन में मराठी का प्रभाव जगह जगह पर देखने को मिलता है। अगर उनके सर्जन में मराठी का प्रभाव देखे तो निम्नांकित बातें प्राप्त होती है। पूना के त्रिवेदी साहब का जिक्र करते हुए उनकी वैश्विक भावना को स्पष्ट करते हुए वह लिखते है -

" **विश्वाची माझे धरा ऐसो जयाची मति स्थिरा किम बहुना, हें चराचरा आपणची झाला** "
अर्थात ब्रम्हांड मेरे में स्थिर हो जिससे उसका मन स्थिर हो, अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह ब्रम्हांड उसका स्वयं का हो जाएगा। वर्तमान समय की सम्बन्धित समस्या को उजागर करते हुए एवं नदियों पर बनाये गए बंध का एवं पानी की विशेषता का वर्णन करते हुए काकासाहब मराठी लेखक नामदेव को याद करते हुए लिखते है -

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

" सुंदरपणाचा अभिमान भारी, त्यांतूनी गर्भिणी नामा म्हणें।"

अर्थात - सुन्दरता का अभिमान अधिक होता है क्योंकि इस से अहम् जन्म लेता है। पैठान के प्रसिद्ध जरी की कारीगरी देखने के लिए काकासाहब गये तब वहाँ के कारीगर के कार्य को एक कहावत के सन्दर्भ में उन्होंने वर्णन किया है। जो कहावत मराठी में है और निम्नांकित है-

"बोटभर विणावे आणि पोटभर खावे ।" -

उपरोक्त मराठी कहावत का अर्थ है- उंगली जीतन बुनना और पेट भरकर खाना, अर्थात काम कम करो किन्तु पेट भरकर खाना खाओ । अतः काकासाहब स्वयं मराठी होने के कारण उनके प्रवासी साहित्य में मराठी का प्रभाव होना प्राकृतिक है और यह हम देख सकते है।

कोकणी

पोर्तुगीझ लोगों के विषय में बात करते हुए काका साहब कहते है थोडा वक्त हुआ उनमे राष्ट्रीयता का ख्याल पैदा होने लगा है। अब वो हिंदुस्तान को ही स्वदेश मानते है। वे लोग कोकणी को स्वभाषा मानने लगे है। अन्य लोगों को स्वराज के लिए कार्यरत होते देख कर गोवा के लोगों में भी स्वराज की भूख दिखने लगी है। लोगों की एकता में ही स्वराज है ऐसा वह जानते है। गोवा के हिंदु और इसाई को एक करने वाले तत्त्व अनेक है। हिंदु और इसाई अनेक रूप से भिन्न होने के वावजूद सार्वजनिक जीवन और सामान्य व्यवहार में दोनों की समज एक दुसरे में ओतप्रोत है। इन दोनों लोगों के मध्य का सबसे बड़ा सामान्य बंधन तो उनकी प्यारी मधुर कोकणी बोली है। कोकणी की प्रसंशा करते हुए काकासाहब कहते है की हिंदुस्तान की सभी भाषा और बोलियों की अगर कसौटी रखी जाय तो मधुरता में कोकणी किसी से भी कम नहीं होगी। कोकणी में संस्कारिता है, अर्थवाहिता है, उपमा, रूपक आदि अलंकार एवं रूपक है । कोकणी में कोई सुबह हुई ऐसा नहीं कहेगा, कहेगा की प्रभात फूली निकड्यू छे ।

उन्होंने हिंदी और कोकणी के विषय में दुःख व्यक्त करते हुए कहा है की पढ़ने वाले को सुनकर आश्चर्य होगा की कोकणी की गोवा में वही हालत है, जैसी हिंदी की उत्तर भारत में है। गोवा में हिन्दु लोग जब लिखते है, तब नागरी अक्षरों में लिखते है, वही भाषा को इसाई लोग जब लिखते है, तब रोमन में लिखते है। हिन्दुओं की कोंकणी में मराठी और संस्कृत शब्दों का उपयोग अधिक होता है, जिससे वह शुद्ध स्वदेशी लगती है। इसाईयों की कोकणी में प्रत्येक दिन पोर्तुगीज भाषा के शब्द बढ़ते जाते है, जिससे अनपढ़ पोर्तुगीज लोगों के लिए यह भाषा कठिन बनती जाती है। जो लोग गोवा छोड़कर दक्षिण कर्णाटक में बसे है उनकी कोंकणी में कानडी शब्द आने लगे है, उतना ही नहीं कोकणी को कानडी लिपि में लिखने में वह लोग सुविधा समजते है।

गोवा में हिन्दु लोगों का एक छोटासा पक्ष है, जो मराठी को कोंकणी की प्रतिस्पर्धी समजते है। मराठी के प्रचार में वह कोकणी का विनाश देखते है। कोंकणी के बाद अगर कोई अधिगम योग्य भाषा हो तो वह राष्ट्रभाषा हिंदी है, ऐसा उनका मानना है। दूसरा पक्ष ऐसा है जो कोकणी को खिली हुई भाषा की प्रतिष्ठा देने के पक्ष में भी नहीं है।

इस प्रकार उनके उपर्युक्त लेखन के बावजूद उनका मानना है की ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी कोकणी और मराठी का विकास भी हो रहा है, और राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए भी हकारात्मक प्रतिकूल हवामान निर्माण हो रहा है, जिसकाकाका साहब ने आनंद व्यक्त किया है।

समापन

इस प्रकार काकासाहब कालेलकर ने श्लोको के मध्यम से संस्कृत का, मधुरता के लिए कोकणी को शब्दों और अंग्रेजी लेखकों के द्वारा अंग्रेजी को, विस्तृत साहित्य सर्जन करके गुजराती को, कहावतें और उक्तियों के द्वारा मराठी को और प्रचार प्रसार के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया है। इस प्रकार उन्हों ने सभी भाषा की निरंतर चिंता की है तभी तो उन्होंने एक जगह लिखा है- हिंदुस्तान के सामाजिक, आर्थिक और भाषा विषयक संगठनो को तोड़ ने पादरियों ने अधिक प्रयास किये है। भाषा की चर्चा में उन्होंने 4 इल्म की बात करते हुए चार इल्म अर्थात अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और हिंदी को बताया है।

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

सन्दर्भ सूचि

[1] कालेलकर, का.(2007), ओतरती दिवालो: अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर
[2] कालेलकर, का.(2013), जीवन प्रदीप: अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर
[3] कालेलकर, का.(2010), जीवन लीला: अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर
[4] कालेलकर, का.(2016), जीवता तहेवारो: अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर
[5] कालेलकर, का.(2015), रखडवानो आनंद: अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर
[6] कालेलकर, का.(2015), हिमालय नो प्रवास: अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर
[7] गुजराती.(2022).*गुजरात राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल.* गांधीनगर. कक्षा 7वी.
[8] गुजराती.(2022).*गुजरात राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल.* गांधीनगर. कक्षा 9वी.

https://www.gapbhasha.org/